शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321-9645

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 22, अंक 1, सितम्बर 2022

एक रचनात्मक क्रान्ति

मूल्य 100/-रू

इस अंक में.....

1– शुभकामना संदेश 02

2– अध्यक्ष की कलम से...-डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख 07

3– अपनी बात- घर से निकलते ही कुछ दूर चलते ही..... -गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी 08

4- संपादकीय-डॉ० भरत त्र्यंबक शेणकर 09

आलेख :

5- हिंदी एवं भारतीय भाषा-साहित्य में अन्तः सम्बन्ध - डॉ० सत्यभामा अडिल 11

6- हिंदी भाषा में व्याकरण संबंधी अशुद्धियाँ - डॉ० सीमा वर्मा 14

7- महाराष्ट्र-मराठी : चंदगडी प्रदेश बोली और संस्कृति का परिचय - डॉ० संजीवनी संदीप पाटिल 16

8- भारतीय भाषा लिपि और संस्कृति - डॉ० ओम प्रकाश त्रिपाठी 19

9- महाराष्ट्र की संस्कृति : डॉ० प्रतिभा जी येरेकार 22

10- छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति : डॉ० सरस्वती वर्मा 25

11- राष्ट्रलिपि : देवनागरी लिपि - प्रा. डॉ. मंगल कोंडीबा ससाणे 28

12- पूर्वोत्तर की लिपि विहीन बोलियों के लिए देवनागरी लिपि - डॉ० रिना रमेश सुरडकर 30

13– क्रांतदर्शी संत तुकाराम के काव्य की प्रासंगिकता - डॉ० भरत त्र्यंबक शेणकर 32

14- देवनागरी लिपि का उद्भव और विकास - डॉ० रश्मि चौबे 35

15– भाषाओं में उभरती हुई नई प्रवृत्तियाँ - सौ० सुगंध हिंदुराव घरपणकर 40

16- राजस्थानी भाषा, लिपि एवं संस्कृति - प्रा. पूर्णिमा उमेश झेंडे 43

17– भारतीय भाषा, लिपि एवं संस्कृति - डॉ० मुक्ता कान्हा कौशिक 45

18- 'महादेवी की काव्य भाषा भावानुगामिनी : विरह-भाव के परिप्रेक्ष्य में' - ममता रेवापाटी 47

19- राष्ट्रीय एकता में देवनागरी लिपि की भूमिका - प्रा. ललिता घोडके 49

20- नागरी लिपि की वैज्ञानिकता - डॉ. प्रा. ऐनूर शब्बीर शेख 51

21- खान्देश का लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति का परिचय - डॉ० रुपाली चौधरी 54

22- सिंधी भाषा व लिपि का उद्भव व विकास - प्रा० मधु मनोहरलाल भंभाणी 57

23- ब्रज की पीड़ा - संतोष शर्मा 'शान' 61

24- दक्षिण भारत द्वारा भारतीय संस्कृति का विकास - डॉ० आरती बोरकर 62

25- देवनागरी लिपि : एक आदर्श लिपि - मधुकर सखाराम शेटे 66

26– साहित्य और नैतिक मूल्य - डॉ० शरद भानुदास कोलते 68

27- संत दादू दयाल के काव्य में सामाजिक दृष्टि - प्रा. थोरात बबन किसन 71

28- महाराष्ट्र की लोककला - प्रा. रोहिणी बालचंद डावरे 74

29– आधुनिक मराठी साहित्य - डॉ० अशोक द्रोपद गायकवाड़ 78

महाराष्ट्र-मराठी : चंदगडी प्रदेश बोली और संस्कृति का परिचय

चंदगड़ी बोली वैसे तो मराठी से संबंधित है लेकिन शब्दावली, व्याकरण प्रणाली, उच्चारण, विशेषताओं आदि के मामले में इसकी अपनी विशिष्टता है। स्वतंत्र रूप से अध्ययन करते समय लिखित, मुद्रित साक्ष्य की कमी है और पांच-छह सौ वर्षों के इतिहास को देखते हुए विद्वानों के समक्ष कोई प्रमाण नहीं है।

-डॉ० संजीवनी संदीप पाटील
प्रमुख-हिंदी विभाग- कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, गडहिंग्लज।
अनेक लेख प्रकाशित एवं अनेक पुरस्कारों से सम्मानित दूरभाष : 9545227228
ईमेल : patilssu@gmail.com

भाषा शब्द की उत्पत्ति 'भा' इस धातु से हुई है। इसका मूल अर्थ बोलना है। भाषा अर्थात् ध्वनियों का एक समूह है। इन ध्वनियों का उपयोग मानव व्यवहार को सुविधाजनक बनाने के लिए किया जाता है इसलिए भाषा संप्रेषण का मुख्य साधन है। ध्वनि उत्पन्न करना मनुष्य की मुख्य क्रिया है। वैसे तो सभी जीव मात्र ध्वनि उत्पन्न करा सकते हैं परंतु मनुष्य के द्वारा उत्पन्न ध्वनि और अन्य प्राणियों द्वारा उत्पन्न ध्वनि, इसमें फर्क है। आवाज या ध्वनि को व्यवहारिक अर्थ देना, ध्वनि और वस्तुओं का जुड़ाव ध्वनि के लिए संकेत उत्पन्न करना के लिए संभव है। इस कारण ही अन्य जानवरों के जीवन की तुलना में मनुष्य का जीवन अधिक आरामदायक और आनंददायक होता है।

भाषा भावों की वाहिका और विचारों की माध्यम होती है। अतएव किसी भी जाति अथवा राष्ट्र का भावोत्कर्ष और विचारों की समर्थता उसकी भाषा से ही स्पष्ट होती है। जब से मनुष्य ने इस धरती पर होश संभाला है, तभी से भाषा की आवश्यकता रही है। भाषा व्यक्ति को व्यक्ति से, जाति को जाति से, राष्ट्र को राष्ट्र से मिलाती है। भाषा द्वारा ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। संसार में संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी, बंगला, गुजराती, उर्दू, मराठी, तेलगू, मलयालम, पंजाबी, उड़िया, जर्मन, फ्रेंच, इतालवी, मंदारिन जैसी अनेक भाषाएँ हैं। भारत अनेक भाषा-भाषी देश हैं। अनेक बोली और भाषाओं से मिलकर ही भारत राष्ट्र बना हैं।

महाराष्ट्र:मराठी: मराठी इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार की एक भाषा है। मराठी भारत की 22 आधिकारिक भाषाओं में से एक है। मराठी महाराष्ट्र राज्य की आधिकारिक भाषा और गोवा राज्य की सह-आधिकारिक भाषा है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में मराठी बोलने वालों की कुल आबादी लगभग 100मिलियन है। मराठी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलने वालों की संख्या के अनुसार, मराठी दुनिया की चौंदहवीं भाषा है (2021 के सर्वेक्षण के आधार पर) और भारत में तीसरे स्थान पर प्रतिस्थापित है। मराठी भारत की प्राचीन भाषाओं में से एक है और महाराष्ट्री प्राकृत का आधुनिक रूप है। मराठी की आयु लगभग 2300 वर्ष है। मराठी भाषियों के राज्य के रूप में, मराठी भाषा को एक विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। आज तक मराठी भाषा में साहित्य की अनेक महान कृतियों की रचना हुई है और उनमें निरन्तर वृद्धि हो रही है।[1]

चंदगडी बोली : चंदगड महाराष्ट्र में कोल्हापुर जिले का एक तहसील है। राजनीतिक रूप से, इस तहसील को महाराष्ट्र के एक दूरस्थ और पिछड़े तहसील के रूप में जाना जाता है। यह तहसील तिलारी और अंबोली पर्वत घाटियों पर स्थित है,

जो कोंकण गोवा से सटा हुआ है। इसका पश्चिमी भाग अति वर्षा वाला, पहाड़ी और वनों वाला है। कोल्हापुर जिले से सबसे दूर, दो अलग-अलग भाषा बोलियों की निकटता और निरंतर संचार, भाषाई क्षेत्रीय संरचना, विभिन्न राजनीतिक प्रभावों की पृष्ठभूमि के बावजूद यहां की बोली की अपनी विशिष्ट विशेषताएं हैं। चंदगड़ तहसील में लगभग 96 लाख हेक्टयर का विशाल क्षेत्र है। इस विस्तृत क्षेत्र में अलग-अलग भौगोलिक स्थितियाँ पाई जाती हैं। आम तौर पर, तहसील को दो खंडों, पश्चिम और पूर्व में विभाजित किया जा सकता है। इसका पश्चिमी भाग अत्यधिक वर्षा वाला, पहाड़ी और वनों वाला है। पूर्व में कम वर्षा और उपजाऊ भूमि है। इसलिए, दोनों वर्गों में खेती की विधि में और उगाई जाने वाली फसलों में भी अंतर दिखाई देता है। पूर्व इलाके में धान की बुवाई की जाती है। इसका मतलब है कि धान को मिट्टी में बोया जाता है और पश्चिम में कीचड़ बनाकर (रोपे) बीज के पौधे को लगाया जाता है। पश्चिमी भाग कोंकणी भाषी क्षेत्र से जुड़ा है, जबकि पूर्वी भाग कन्नड़ भाषी क्षेत्र से जुड़ा है। इसलिए, दोनों वर्गों में सांस्कृतिक अंतर देखा जाता है। इसके कारण ही तहसील के पूर्व के इलाके के त्यौहारों पर कर्नाटक राज्यका तो पश्चिम में महाराष्ट्र का प्रभाव दिखाई देता है। विभिन्न संस्कृतियों, विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों, दूरियों, संपर्क क्षेत्रों, अलग-अलग पड़ोस, आदि के कारण, चंदगड तहसील के इन दो इलाकों में चंदगड़ी बोली के दो अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं। तहसील के पूर्व से पश्चिम की ओर यात्रा करते हुए, ऐसा लगता है कि कन्नड़ भाषा के प्रभाव की बोली से चंदगडी बोली कोंकणी की बोली भाषा में स्थानांतरित हो रही है। इसलिए तहसील में चंदगडी बोली के विभिन्न रूप सामने आते हैं, पूर्वी चंदगडी और पश्चिम चंदगड़ी को भी स्थानीय बोलियों में विभाजित किया जा सकता है। परंतु इस विशाल इलाके में बोली जाने वाली बोली को 'चंदगडी बोली' के रूप में ही जाना जाता है।

इतिहास-चंदगड़ी बोली वैसे तो मराठी से संबंधित है लेकिन शब्दावली, व्याकरण प्रणाली, उच्चारण, विशेषताओं आदि के मामले में इसकी अपनी विशिष्टता है। हालाँकि, चंदगड़ी बोली का मराठी बोली के रूप में अध्ययन किया जाता है। किसी भी भाषा-बोली की पूर्व धारणाओं के अध्ययन के लिए लिखित-मुद्रित साक्ष्य का विशेष महत्व होता है। स्वतंत्र रूप से इस बोली का अध्ययन करते समय लिखित, मुद्रित साक्ष्य की कमी महसूस होती है। प्रस्तुत बोली के अध्ययन के लिए पिछले पांच से छह सौ वर्षों के इतिहास देखे तो पता चलता है कि इस क्षेत्र के किसी भी व्यक्ति ने इस बोली का उपयोग करके प्रभावी ढंग से किए लेखन का कोई प्रमाण नहीं है। बोली के पिछले पांच-छह सौ वर्षों के इतिहास को देखते हुए विद्वानों के समक्ष प्राचीन नमूने के रूप में कोई प्रमाण नहीं है। इसलिए, इस बोली का स्वतंत्र रूप से पता नहीं लगाया जा सकता है। हालाँकि, इस बोली के गठन का ऐतिहासिक कारण चंदगड़ी बोली की शब्दावली और उच्चारण पर आधारित हो सकता है।

हालांकि रणजित देसाई जैसे बहुचर्चित साहित्यकार इसी क्षेत्र में पैदा हुए। उन्होंने अपना सारा लेखन इसी क्षेत्र में रहकर किया। उनके लेखन में इस स्थान का 'माझा गाव' (मेरा गांव), 'बारी' (बारी) आदि कृतियों में चित्रण दिखाई देता है। लेकिन उन्होंने अपने लेखन के लिए यहां की बोली का इस्तेमाल नहीं किया। उनके बाद भी कई साहित्यकार इस क्षेत्र में उभरे। उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार साहित्य का निर्माण भी किया। लेकिन ऐसा लगता है कि कुछ समाचार पत्रों के लेखों को छोड़कर किसी ने भी इस बोली का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं किया है।

चंदगड तहसील का अधिकांश हिस्सा पहाड़ी होने के कारण, यहां के किसानों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। अत्यधिक कठोर परिश्रम करने के बाद भी अगर बारिश ने सहयोग दिया तो ही फसल हाथ में आती है अन्यथा नहीं। अत्यधिक बारिश के कारण अपने किए-कराए पर पानी फिरता देख यहां के किसान बेबस हो जाते हैं। इस क्षेत्र की महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक मेहनती हैं। बारिश के मौसम में खेत में काम करते हुए अपनी थकान दूर करने हेतु तथा कई त्योहारों के अवसर पर यहां की महिलाएं बहुत सारे गीत गाती हैं। दीवाली, गणपति चतुर्थी, नागपंचमी यहां की महिलाओं द्वारा मनाया जाने वाला त्योहार है।

इन गीतों को इस बोली में 'गीत्ती' कहा जाता है। खासतौर से दीवाली के समय धन तेरस से लेकर भाई दूज तक गांव की छोटी-छोटी बच्चियां इकट्ठी आकर अपनी टोली (मेळा) बनाती है। पांच-छ्ह लड़कियां मिलकर हाथ में छोटी टोकरी (रवळी) लेकर अपने गांव में तथा आस-पास के गांव में हर एक घर के सामने जाकर पारंपरिक गीत गाती है। अक्सर यह गीत भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीला पर आधारित रहते हैं। जैसे कि,

"कृष्णानं मारली चेंडुफळी,कृष्णानं मारली चेंडुफळी, चेंडु गेला यमुनातळी, चेंडु गेला यमुनातळी।"

तथा

"आली वरसान दिवाळी, आली वरसान दिवाळी।/भहिण भावाला ओवाळी, भहिण भावाला ओवळी।
भैनी आरतीत कायु घालु,भैनी परतीत कायु घालु,/ घालु टिकियाचा जोडू,घालु टिकीयाचा जोडू।"

अर्थात् साल भर बाद दीवाली आयी है, इस शुभ अवसर पर बहन भाई की आरती उतार रही है। भाई अपनी बहना से पूछ रहा है कि तुझे आरती में क्या चाहिए? तब बहन कहती है कि मुझे गले का हार चाहिए। इस प्रकार भाई-बहन का प्यार दिखाई देता है। इन गीतों को सुनते ही स्त्रियां अपनी मायके की याद में खो जाती है। इससे खुश होकर उन लड़कियों को चावल तथा कुछ रुपए देती हैं। इस समय गांव के छोटे लड़के भी जानबूझकर लड़कियों को छेड़ते रहते हैं। जैसे कि, बच्चियों को फल फेंक कर मारना, चोटी खींचना, उनकी टोकरी छुपाना आदि। ऐसे समय में गांव के बड़े-बुजुर्ग लड़कियों की हिफाजत करते हैं, बच्चों को डांटते है। जिस प्रकार वृंदावन में गोपियों के संग भगवान श्रीकृष्ण छेड़खानी करते थे, ठीक वैसा ही माहौल दीवाली के समय हर गांव-गांव में दिखाई देता है। इसके साथ ही लड़कियां अपने गांव में आने वाले अजनबियों का रास्ता रोककर उनसे भी पैसा वसूल करती है। अपनी ससुराल में पहली दीवाली मनाने के लिए आए नए दूल्हे की भी आरती उतार कर उससे पैसे लिए जाते हैं। दीवाली के बाद आने वाली पूर्णिमा की रात गांव की सभी लड़कियां और औरतें गेंदे के फूलों की रंगोली बनाकर पूरी रात गीत गाती हुई झिम्मा-फुगडी जैसे खेल खेलती है। दीवाली के समय इकट्ठे किए पैसों से कुछ मिठाईयां बनाकर मिल बांट कर खाई जाती है। यह समय फसल की कटाई का होने के कारण किसान भी खुश रहते है। इस प्रकार हर एक त्योहार चंदगड में अलग तरीके से मनाया जाता है।

चंदगड़ी बोली की शब्दावली और व्याकरणिक विशेषताओं को देखते हुए, इस बोली के गठन के पीछे के कारणों का पता लगाया जा सकता है। सबूत मिलते हैं कि इस क्षेत्र पर मौर्य, सातवाहन, शिलाहार, कदम्ब, राष्ट्रकूट और यादव राजवंशों का शासन था। चंदगड क्षेत्र में राजनीतिक परिवर्तन की समीक्षा करते समय कोंकण, गोवा, कारवार, बेलगाम, मैसूर, बैंगलोर, बीजापुर तक के शासन पर विचार करना होगा। चूंकि ये सभी राज्य अलग-अलग बोलियों के हैं। यह क्षेत्र गोवा और कोंकण क्षेत्र के समुद्र तटों और बंदरगाहों के करीब हैं इस कारण आदिकाल से इस क्षेत्र में व्यापारी और विदेशी आते-जाते रहे हैं। गोवा के पुर्तगाली मिशनरी भी इस क्षेत्र में सक्रिय थे। चूंकि यहां से गोवा केवल 60–70 किमी दूर है। ऐसे विभिन्न कारणों से यहां की भाषा पर विदेशी भाषा, उर्दू भाषा, कोंकणी, कन्नड़ भाषा का प्रभाव दिखाई देता है।

चंदगडी बोली: "म्हायारास जाऊसेत म्हणून भगाटल्याधरणं राबोललोय. माझ्या वाट्याची रोच्ची कामं सप्पोसच रात व्हते. आज म्हायारास जाऊसेत म्हणून यरवाळ्म्हेरेन कामास लालोय तरीबी कामं सप्पेनात. निंबार पडोच्याआत बुक्क्याळास पोचतल यवजलोय खरं कव्व जाऊन लागतोय काय म्हाईत. पंदरादी झाले बाबा न्हंगड्यास पडलाय. आयीच तीनदा सांगण यल, खरं कामातण उसगरच गावेणा. तिचं अवसानच गळालय."

मराठी: आज माहेरला जायचे असल्यामुळे सकाळपासूनच मी कामात आहे. माझी नेहमीची कामे संपायला दररोज रात्र होते. तरीही माझ्या मागे लागलेली कामे संपत नाहीत. आज मुद्दाम पहाटेपासून काम आवरायला सुरुवात केली आहे. तरीही कामे आवरायला तयार नाहीत. दुपारी ऊन वाढायच्या आत मला बुक्क्याळला पोहोचायचे आहे. पण कधी पोचते माहित नाही. पंधरा दिवसापासून बाबा खूपच आजारी आहेत. आईचा तीन वेळा निरोप आला. परंतु कामातून उसंत मिळत

शेष पृष्ठ 111 पर...

विकिपीडिया, 5. भाषा विज्ञान-हेमा, 6. भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान-ब्रजेश वर्मा

महाराष्ट्र-मराठी .....बोली पृष्ठ 18 का शेष.....

नाही. आई अलीकडे खूपच काळजी करत असते.

हिंदी : आज मायके जाना चाहती हूँ, इसलिए सुबह से काम कर रही हूँ। मेरा रोज़ का काम खत्म होते-होते तो रात ही हो जाती है। मेरे हिस्से का काम खत्म ही नहीं होता। आज सुबह से ही जान बूझकर काम शुरू किया है लेकिन फिर भी काम पूरा हो ही नही रहा है। मैं दोपहर से पहले बुक्क्याळ पहुंचना चाहती हूं। पर पता नहीं कब पहुँच जाऊंगी। पंद्रह दिनों से पिताजी बीमार है। मां ने तीन बार बुलावा भेजा है लेकिन काम से फुरसत ही नहीं मिल रही है। आजकल माँ भी बहुत परेशान है।

चंदगड़ी मराठी की एक विशिष्ट बोली है। इस बोली ने अपनी स्वतंत्र शब्दावली, उच्चारण विशेषताओं आदि के संदर्भ में अपनी विशिष्टता बनाए रखी है। किसी भी भाषा की बोली का उच्चारण उस बोली की विशेषता होती है। मानक मराठी के साथ बोली में शब्दों के उच्चारण की तुलना करने पर बोली में अंतर स्पष्ट होता है। शब्दावली की दृष्टि से यह बोली संपन्न है। मानक मराठी से इस बोली की अलग और स्वतंत्र शब्दावली है।

यहां की संस्कृति, रहन-सहन, पहनावा, तीज-त्योहार सब अलग है। राजनीति, अर्थनीति, सांस्कृतिक, साहित्य, कला, क्रीड़ा आदि सभी क्षेत्रों में चंदगडी लोग अपना दायित्व बखूबी निभा रहे है।

संदर्भ : 1. भारतीय जनगणना 2001-केंद्र सरकार, 2. भारतीय भाषांचे लोकसर्वेक्षण, सं. अरुण जाखडे.मुख्य सं.गणेश देवी, भाषा संशोधन आणि प्रकाशन केंद्र, बडोदा 2013 पृ. 114, 3.नवाक्षर दर्शन (त्रैमासिक), डा.नंदकुमार मोरे,आक्टों-नोव्हें-डीसें 2014.मराठी भाषा उद्भव व विकास, कृष्णाजी कुलकर्णी, The International Bank Service Publication, 1933